RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.

वर्ष: 74 अंक : 21

सृष्टि संवत् 1960853118

20 अगस्त, 2017

दयानन्दाब्द 193

वार्षिक : 100 रू.

आजीवन : 1000 रू.

दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–74, अंक : 21, 17-20 अगस्त 2017 तदनुसार 5 भाद्रपद सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

दो मार्ग

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

द्वे स्त्रुती अशृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च।।

-ऋ० १०।८८।१५

शब्दार्थ-अहम् = मैं पितृणाम् = पितरों, देवानाम् = देवों उत = और मर्त्यानाम् = मरणधर्माओं के द्वे = दो स्त्रुती = मार्ग अशृणवम् = सुनता हूँ। ताभ्याम् = उन दोनों से इदम् = यह विश्वम् = जगत् एजत् = गति करता हुआ समेति = आ-जा रहा है और यत् = जो पितरम्+मातरं+च = माता-पिता के अन्तरा = सम्बन्ध से है।

व्याख्या-मनुष्यों में सकाम और निष्काम दो भेद हो सकते हैं। निष्काम मनुष्यों को देव कहते हैं। 'अकामा विश्वे वो देवाः शिक्षन्तो नोप शोकिम' [अथर्व० ६।११४।३] = हम अकाम, कामनारहित देव तुम्हें शिक्षा देते हुए भी नहीं कर सके। निष्काम मनुष्यों = देवों का मार्ग देवयान होता है। शतपथब्राह्मण में लिखा है-'सत्यं वै देवाः' = देव सर्वथा सत्य होते हैं। अतएव-'सत्येन पन्था विततो देवयानः' येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामाः = देवयान = देवों के जाने का मार्ग सत्य से विस्तृत है, इस मार्ग से आप्तकाम ऋषि चलते हैं। देवयान का फल मोक्ष है। दूसरा मार्ग पितृयान है। जिस मार्ग से चलने पर मनुष्य पिता बनता है। पिता बनने का अभिप्राय है जन्म-मरण के चक्कर में आते रहना। सारा संसार इन्हीं दो मार्गों से चल रहा है। मुण्डकोपनिषत् [१।२।१०-११] में इन दो गतियों का साङ्केतिक वर्णन है-

इष्टापूर्त्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः।
नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेऽनुभूत्वेमं लोकं हीनतरं वा विशन्ति।।
तपः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः।
सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा।।

इष्ट और पूर्त्त को ही सबसे बढ़िया मानने वाले अतिमूढ़जन उससे अतिरिक्ति श्रेयः = कल्याण को नहीं जानते। वे अपने कर्म से जन्य सुखावस्था का अनुभव करके हीनतर दशा को प्राप्त होते हैं, किन्तु जो शान्त विद्वान् संन्यासी होकर वन में रहते हुए तप और श्रद्धा का अनुष्ठान करते हैं, वे निष्पाप महात्मा सूर्यद्वार से वहाँ पहुँचते हैं जहाँ वह अविनाशी, अविकारी पूर्ण पुरुष है। सांसारिक सुखसमृद्धि के साधनों को इष्टापूर्त्त करते हैं। जो केवल शरीरसुख को ही सब-कुछ मानते हैं, मोक्ष का जिन्हें विचार तक नहीं आता, वे यदि सत्कर्मी हैं, तो अपने उन सत्कर्म्मों का फल सुख इस जन्म या दूसरे जन्म में भोगकर फिर हीन-अवस्था में आते हैं, क्योंकि सुखदायक उपाय अपना फल दे चुके होते हैं। इसके विपरीत विषयभोग में दोष दर्शन के द्वारा विरक्त, चञ्चलतारहित होकर मोहमाया के बन्धनों को जो काट चुके हैं, वे महापुरुष श्रद्धापूर्वक तप में लग जाते हैं, और परम पुरुष को प्राप्त कर परमानन्द को प्राप्त करते हैं। पहला मार्ग पितृयान है, दूसरा देवयान है। उपनिषदों में इन दोनों मार्गों का विस्तृत उल्लेख है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत-कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत 5 नवम्बर 2017 रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पर्यावरण संरक्षण यज्ञ

-पं० वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4-E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

1 वृक्ष संरक्षण मन्त्र

1. ओ३म् मूलेभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/28

वृक्षों के मूलों अर्थात् जड़ों की रक्षा के लिए यह आहुति समर्पित है। हमारा कर्त्तव्य है कि खाद-पानी देकर पेड़-पौधों की रक्षा करें। वृक्ष की कटाई, छंटाई करते समय उसे जड़ से ही न समाप्त कर दें।

2. ओ३म् शाखाभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/28

शाखाएं हरी-भरी, स्वस्थ बनी रहने के लिए हम यह आहुति प्रदान करते हैं।

3. ओ३म् वनस्पतिभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/28

वनस्पति अर्थात् वटवृक्ष आदि की रक्षा हेतु यह आहुति शुभ हो।

4. ओ३म् पुष्पेभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/28

पुष्पों की सुगन्धि चारों दिशाओं में फैलने के लिए यह आहुति समर्पित है।

हमें यत्र तत्र सर्वत्र स्थान के अनुसार छोटे बड़े फूलदार पेड़-पौधे लगाने चाहिए। जिससे सब जगह सुगन्धित वायु का विस्तार हो। विभिन्न शुभ अवसरों पर हवन, पूजा-पाठ, स्वागत-सत्कार, शुभाशीष, सजावट, समारोह आदि तथा अन्तिम विदाई शवयात्रा, श्रद्धाञ्जलि हेतु फूलों की आवश्यकता पड़ती है। अतः पुष्पोद्यानों में वृद्धि अत्यन्त आवश्यक है। कृषकों के लिए फूलों की खेती भी उत्साहजनक एवं लाभदायक है।

5. ओ३म् फलेभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/28

खट्टे-मीठे सभी प्रकार के फलों की वृद्धि के लिए हम यह आहुति समर्पित करते हैं।

स्वास्थ्य रक्षा के लिए फलों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। पर्व, व्रत, समारोह, उत्सव आदि सामान्य एवं विशेष सभी अवसरों पर फलों की महिमा बनी रहती है। अतः फलदार वृक्षारोपण, वृद्धि, संरक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है।

6. ओ३म् ओषधीभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/28

विभिन्न प्रकार की लाभप्रद ओषधियों की वृद्धि के लिए यह आहुति हम सभी प्रदान कर रहे हैं।

वन, पर्वत, मैदानीक्षेत्र, जलाशय आदि विभिन्न स्थानों पर उत्पन्न होने वाली ओषधियों अर्थात् जड़ी, बूटियों की रक्षा, वृद्धि और उत्पादन हेतु हमें निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

7. ओ३म् तूलेभ्यः स्वाहा।। वाज. सं. 22/28

पेड़ पौधों की नई उगने वाली डालियों के लिए यह दी गई आहुति सार्थक हो अर्थात् ये डालियां सदैव हरी-भरी रहते हुए वृद्धि को प्राप्त हों।

8. ओ३म् काण्डेभ्यः स्वाहा।। वाज. सं. 22/28

वृक्षों के तनों की दृढ़ता अर्थात् मजबूती के लिए हमारे द्वारा यह आहुति दी जा रही है। क्योंकि तनों की स्थिरता और विस्तार पर ही वृक्ष का भार टिकता है, स्थिर रहता है।

पीपल, बरगद जैसे पेड़ अपने तनों के आधार पर ही विस्तृत होते जाते हैं। बड़े-बड़े पेड़ घनी, ठंडी छाया भी प्रदान करते हैं।

9. ओ३म् वल्शेभ्यः स्वाहा।। वाज. सं. 22/28

छोटी-छोटी टहनियों की वृद्धि के लिए यह आहुति समर्पित है।

10. ओ३म् मौषधीर हिंसीः स्वाहा।। यजु. 6/22

हे मनुष्यो ! वन की औषधियों को नष्ट मत करो। हमारा यह कथन सत्य सिद्ध हो।

2 जल संरक्षण मन्त्र

ओ३म् अदभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/25

सर्वत्र व्याप्त जलों के लिए हम स्वार्थवृत्ति से ऊपर उठकर समर्पणवृत्ति वाले बनें। हमारा यह कथन सत्य सिद्ध हो।

आज शुद्ध पेय जल सर्वत्र दुर्लभ है। इसे सामान्यजन के लिए भी उपलब्ध करवाने का प्रयत्न करें।

12. ओ३म् उदकाय स्वाहा।। यजु. 22/25

वाष्प रूप में ऊपर उठते हुए जलों की शुद्धि के लिए हम यज्ञशील होकर आहुति समर्पित करते हैं। वस्तुतः वाष्पीभूत होकर जो जल द्रवीभूत होता है, उसे उदक कहते हैं।

13. ओ३म् मेधाय स्वाहा।। यजु. 22/26

मेघों-बादलों की शुद्धता के लिए यह आहुति है।

14. ओ३म् विद्योतमानाय स्वाहा।। यजु. 22/26

चमकते, गर्जते, कड़कते मेघों की बिजली के लिए यह आहुति है।

15. ओ३म् वर्षते स्वाहा।। यजु. 22/26

वर्षा करने वाले मेघों के लिए यह आहुति है।

16. ओ३म् कूपाभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/25

कूप-कुएं की जलशुद्धि के लिए यह आहुति समर्पित है।

17. ओ३म् तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/25

स्थिर जलों अर्थात् जलाशयों की जलशुद्धि के लिए हम सभी यह आहुति समर्पित करते हैं।

18. ओ३म् स्रवन्तीभ्यः स्वाहा।। यजु. 22/25

बहते हुए जलस्रोतों-उद्गम स्थलों के लिए यह आहुति शुद्धिकारक हो।

जो मनुष्य अग्नि में सुगन्धित पदार्थों को समर्पित करते हैं, वे जलादि पदार्थों की शुद्धि करने वाले होने से पुण्यात्मा होते हैं। जल से ही सब पदार्थों की शुद्धि होती है, यह जानना चाहिए।

वस्तुतः यज्ञ होने पर समीपवर्ती वातावरण में रोगनाशक, स्वास्थ्य-वर्धक सुगन्धित वायु फैल कर वाष्पकणों को भी अपने गुणों से युक्त कर देती है, जिससे वायु के दूषित और रोगकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

यही वाष्पकण सूर्य लोक और अन्तरिक्ष में पहुंच कर द्रव रूप में परिवर्तित होकर मेघरूप धारण कर शुद्ध जल की वर्षा करने में सहायक होते हैं-

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यग् आदित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टे रन्नं ततः प्रजाः।। मनु. 3/76

अग्नि में डाली गई आहुति वाष्पकणों के रूप में आदित्य अर्थात् सूर्यलोक में पहुंचती है और उससे मेघ बनते हैं। सूर्य द्वारा मेघों के छिन्न-भिन्न वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजा की तुष्टि-पुष्टि होती है।

इससे सिद्ध है कि जो हवन करता है, वह सम्पूर्ण प्रजा का पालन करता है।

19. निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् स्वाहा।। यजु. 22/22

हमारी प्रत्येक कामना के अनुसार मेघ वर्षा करें अर्थात् जब-जब अन्नादि की दृष्टि से वर्षा की आवश्यकता हो तब-तब पर्जन्य देव वृष्टि करने वाले हों। हमारी सभी प्रकार की ओषधियां उत्तम फल वाली होकर परिपक्व हों।

20. ओ३म् अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजं अपामुत प्रशस्तये स्वाहा।। ऋ. 1/23/19

हे मनुष्यों ! अमृत तुल्य जल है, जल में औषधीय गुण हैं। इनका सदैव सदुपयोग करो। जल-जल की प्रशंसा और स्तुति करने के लिए सदा तत्पर रहो।

21. ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः स्वाहा।। यजु. 36/12

यह दिव्य गुण वाले जल हमारे लिए अभीष्ट सिद्धिकारक, शान्तिदायक, रोगनाशक, स्वास्थ्य-वर्धक एवं पवित्रताकारक हों। शान्तिप्रदायक जल हमारे अन्दर और बाहर सुखकारी बहें।

22. ओ३म् मा आपो हिंसीः स्वाहा।। यजु. 6/22

हे मनुष्यो ! जल को नष्ट एवं दूषित मत करो।

3 ओषधि संरक्षण मन्त्र-

23. ओ३म् शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः।

हे मातृरूप ओषधियो ! तुम्हारे सैकड़ों धाम 12/76

(क्रमशः)

सम्पादकीय

स्वराज्य प्राप्ति की महत्ता

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने स्वराज्य की महत्ता को स्पष्ट करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में लिखा है कि कोई कितना भी करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराए का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। अर्थात् अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य बुरे से बुरे स्वदेशी राज्य की बराबरी नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा दिए गए आजादी के इस मूलमन्त्र से प्रेरणा लेकर हमारा देश आजादी के लिए प्रयत्नशील हुआ। आर्य समाज की विचारधारा से प्रेरणा लेकर अनेकों क्रान्तिकारियों और नेताओं ने इस देश को आजाद कराने के लिए बलिदान दिया, जीवन अर्पण किया जिसके परिणामस्वरूप अन्त में 15 अगस्त 1947 को हमें स्वराज्य की प्राप्ति हुई थी। यह स्वतन्त्रता हमें बहुत बड़े बलिदानों के पश्चात प्राप्त हुई थी। इस पराधीनता की बेड़ियों को काटने के लिए भारतीयों ने अनेक बलिदान दिए थे, अनगिनत कष्ट सहे थे, अनेकों क्रान्तिकारियों ने हंसते-हंसते फांसी के फन्दे को चूमा था।

स्वतन्त्रता का अर्थ है-अपना राज्य या अपना शासन। जहां पर किसी दूसरे का हस्तक्षेप न हो उसे ही स्वतन्त्र राज्य कहा जाता है। चाहे देश हो, समाज हो या व्यक्ति हो सभी को स्वतन्त्रता प्रिय है। कोई भी व्यक्ति किसी के अधीन होकर नहीं रहना चाहता। कोई भी जीव या पशु-पक्षी भी आजाद रहना चाहते हैं। इसीलिए स्वतन्त्रता का अर्थ है कि मनुष्य मानसिक रूप से विचार करने के लिए, शारीरिक रूप से सुखों की प्राप्ति के लिए किसी के अधीन न होकर अपनी इच्छानुसार विचरण करे।

चाहे कोई कुछ भी कहे परन्तु यह सत्य है कि स्वतन्त्रता की भावना सर्वप्रथम आधुनिक युग के निर्माता क्रान्तिदर्शी महर्षि दयानन्द के मन में ही उठी थी। सन् 1873 ई. में जब महर्षि दयानन्द की भेंट तत्कालीन वायसराय लॉर्ड नार्थ ब्रुक से हुई तो उन्होंने महर्षि दयानन्द जी से पूछा कि क्या आप अपने देश में अंग्रेजी शासन द्वारा उपलब्ध उपकारों का भी वर्णन करेंगे और अपने व्याख्यानों के आरम्भ में ईश्वर से जो प्रार्थना किया करते हैं उसमें भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के निरन्तर स्थिर रहने की भी प्रार्थना किया करेंगे?

इसके उत्तर में महर्षि दयानन्द ने कहा था कि- मैं ऐसी किसी भी बात को मानने में असमर्थ हूं, क्योंकि मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों को अबाध राजनैतिक विकास और संसार के राज्यों में समानता का दर्जा पाने के लिए शीघ्र पूर्ण स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। श्रीमान् जी मैं तो नित्य प्रति सर्वशक्तिमान परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि मेरा देश विदेशियों की दासता से मुक्त हो जाए।

अत: सिद्ध है कि स्वतन्त्रता का बीज सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बोया था। वही बीज धीरे-धीरे अंकुरित हुआ और उसी ने पल्लवित होकर एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लिया, जिसका फल हमें 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता के रूप में प्राप्त हुआ। जिन क्रान्तिकारियों ने इस महान् स्वतन्त्रता रूपी यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी है उनके मार्गदर्शक के रूप में सब श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से ही हम हर वर्ष 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाते हैं, परन्तु क्या हमने कभी विचार किया है कि स्वतन्त्रता के 70 वर्ष पूर्ण होने पर भी हम पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं भी या नहीं? यह सच है कि आज हम स्वतन्त्र हैं, हम पर विदेशी शासन नहीं है। परन्तु फिर भी हम मानसिक रूप से गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए हैं। हमारा रहन-सहन, खान-पान, विचार, भाषा वही है। अंग्रेज भारत से चले गए परन्तु वे एक ऐसी शिक्षा का प्रचलन कर गए कि भारतवासियों के मन में परतन्त्रता की छाप रह जाए। उनका मानना था कि यह शिक्षा भारतीयों के मन में ऐसी भावना उत्पन्न करेगी, जिससे भारतीय वेशभूषा से तो भारतीय ही रहेंगे लेकिन मानसिक तौर पर वे अपने आपको विदेशी समझेंगे। ठीक यही परिस्थिति आज भारत की है। हम केवल मानसिक रूप से ही परतन्त्र नहीं है। बल्कि वेषभूषा, रहन-सहन, बोल-चाल, खान-पान सभी कार्यों में परतन्त्र हैं।

राष्ट्र उन्नति के ऊपाय दर्शाते हुए वेद में कहा गया है-जब तक राष्ट्र के लोग अपनी मातृभाषा, मातृभूमि और मातृ संस्कृति के प्रति एकजुट होकर कार्य नहीं करेंगे तक तक राष्ट्र की उन्नति की कल्पना करना भी असम्भव है। अपने देश की मातृभाषा को हमेशा सम्मान देना चाहिए, अपनी संस्कृति और सभ्यता के ऊपर हमें गौरव होना चाहिए तथा अपनी मातृभूमि के लिए मर-मिटने की भावना होनी चाहिए। जब तक यह भावना राष्ट्र के नागरिक के हृदय में नहीं रहती वह उच्च शिक्षित होकर भी मानसिक रूप से गुलाम ही रहेगा। ऐसा नागरिक कभी भी राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य नहीं कर सकता। देश की वर्तमान अवस्था पर दृष्टि ड़ालने से ज्ञात होता है कि स्वतन्त्रता के पश्चात भारत सांस्कृतिक, चारित्रिक, नैतिक दृष्टि से पतन की ओर अग्रसर है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात देश की उन्नति, खुशहाली और तरक्की के बारे में हमारे शहीदों ने सपना देखा था वो सपना अधूरा ही रह गया है। आज देश में अनेक प्रकार की बुराईयां फैल रही हैं, बलात्कार की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं, युवा वर्ग नशे में अपने यौवन को बर्बाद कर रहा है। जो देश अपनी समृद्ध संस्कृति और सभ्यता के लिए प्रसिद्ध था, आज वही देश दूसरों की संस्कृति और सभ्यता को अपनाकर अपने आपको श्रेष्ठ समझता है। आज का मनुष्य अंग्रेजों की संस्कृति, सभ्यता, उनका रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या, रात को लेट सोना, सुबह लेट उठना आदि अपनाकर अपने आपको आधुनिक समझता है। अपनी संस्कृति और सभ्यता की उपेक्षा के कारण ही हम रसातल की ओर जा रहे हैं।

आओ हम सब स्वराज्य प्राप्ति दिवस के अवसर पर शपथ लें कि हम भारत की एकता और अखण्ड़ता को बनाए रखने में हरसम्भव अपना योगदान देंगे। राष्ट्र की उन्नति में बाधक कुरीतियों, बुराईयों व अन्धविश्वास को जड़ से खत्म करेंगे। नशे के कारण जो युवा पीढ़ी अपना अस्तित्व खो रही है, उस युवा पीढ़ी को सही मार्ग दिखाकर राष्ट्र निर्माण के कार्यों के लिए प्रेरित करेंगे। हमारा स्वतन्त्रता दिवस मनाना तभी सार्थक हो सकता है यदि हम पूर्ण रूप से अपने आपको राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

ईश्वर अस्तित्व का प्रमाण–सृष्टि रचना

–ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

विश्व वन्द्य, विश्व रत्न, महर्षि दयानन्द आर्यसमाज के दूसरे नियम का समापन इस प्रकार करते है– वह सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है। उस वाक्यांश से मेरी समझ में यही आया कि ईश्वर की अवधारणा का पैमाना, उसका सृष्टिकर्ता होना आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य है। सीधी सादी बात है, जो सृष्टि रचना नहीं करता, वह ईश्वर हो ही नहीं सकता।

सृष्ट, सृष्टि रचना और सृष्टि रचना का कर्ता, इन बिन्दुओं को विस्तार देने पर ही महर्षि दयानन्द के उपरोक्त समापन वाक्यांश का अर्थ समझना और आत्मसात करना कुछ आसान होगा।

सृष्ट शब्द का शान्दिक अर्थ है, बना हुआ। बनाया गया। संज्ञा हुई सृष्टि अर्थात् यह सृष्टि-संसार बना हुआ है। जो वस्तु बनी हुई होती है तो स्वाभाविक रूप से उसका बनाने वाला भी होना चाहिए। इसीलिये विज्ञानवेत्ता, विश्व विख्यात आर्य संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती कहते हैं-जब सृष्टि है तो उसका बनाने वाला भी होना चाहिए, उस बनाने वाले को कोई भी नाम दें, वह सृष्टिकर्त्ता ही कहलाएंगा। उसे ईश्वर सम्बोधित करने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।

आधुनिक भौतिक विज्ञान अन्तरिक्ष विज्ञान ने सृष्टि के भिन्न-भिन्न आयामों की जानकारी अत्यन्त सुलभ करा दी है। विश्व का प्रत्येक शिक्षित बालक-बालिका बहुत अच्छी तरह जानता है कि पृथिवी गोल-अन्डाकार है। अपनी धुरी पर घूमती हुई, सूर्य की परिक्रमा 365.256 दिन में करती है। उसकी परिभ्रमण गति 107,200 किलो मीटर प्रति घन्टा है। पृथिवी से सम्बन्धित अन्य विवरण यथा वजन, आयतन, तापमान, पर्तों में बनावट आदि की जानकारी भी सहज ही उपलब्ध है। पृथिवी का गुरुत्वाकर्षण अन्तरिक्ष में अन्य पिण्ड के साथ, विशेष कर सूर्य और चन्द्रमा से है। गुरुत्वाकर्षण पृथिवी को अपने अक्ष पर स्थिर रखता है और उसकी परिभ्रमण गति को नियंत्रित रखता है। पृथिवी और चन्द्रमा के गुरुत्वाकर्षण के कारण समुद्र में ज्वार-भाटा आता है।

वेद की मान्यता है कि उस पृथिवी के अतिरिक्त अन्य ग्रह हैं, जहां जीवन है। टाइमस ऑफ इन्डिया ग्वालियर संस्करण दिनांक 21 जून 2017 में प्रकाशित समाचार के अनुसार अमेरीकी अनुसंधान केन्द्र नासा की केपेलर अन्तरिक्ष दूरबीन ने अन्तरिक्ष के 219 ग्रहों की खोज की है जिसमें 10 ग्रह पृथ्वी के आकार के है, जहां जीवन के लिये सभी आवश्यक तत्व उपलब्ध है।

इसके कुछ ही दिन पूर्व एक टी.वी. शो में बताया गया था कि पृथ्वी से 15 लाख प्रकाश वर्ष की दूरी पर एक सौरमण्डल पाया गया है जिसके ग्रहों में पानी, पहाड़, नदियां एवं जीवन के सभी आवश्यक तत्व उपलब्ध हैं। इन खोजों से वैदिक मान्यताओं की पुष्टि होती है।

विज्ञान उस भूमण्डल पर, जीवन का प्रस्फुरन, एक अरब वर्ष पहले मानता है जबकि वेदानुसार 1 अरब 96 करोड़, 8 लाख 53 हजार 118 वर्ष है।

महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका में सृष्टि रचना सम्बन्धी तीन अध्याय दिए गए है जिनमें सृष्टि रचना सम्बन्धी पर्याप्त विवरण मिलता है।

सृष्टिकर्त्ता परमात्मा तो हमेशा ही रहता है क्योंकि सृष्टि की रचना वही करता है।

प्रश्न उठता है कि सृष्टि रचना से पूर्व की स्थिति क्या रहती हैं ? वेदानुसार सृष्टि रचना से पूर्व, सृष्टिकर्त्ता और सृष्टि रचना की सामग्री रहती है। सृष्टि निर्माण भी सामग्री को ही वैदिक भाषा में 'कारण तत्व' निरुपित किया गया है। कारण तत्व को सीधी, सरल भाषा में 'बीज रूप', कहा जा सकता है और यह कारण तत्व ईश्वर के सामर्थ्य में ही रहता है।

सृष्टि का आशय केवल उस पृथिवी से नहीं है, बल्कि समस्त ज्ञात-अज्ञात नक्षत्र मण्डल से है। जिन ग्रहों में जीवन है, वहां की समस्त वस्तुएं, जीव-जन्तु उस रचना में सम्मिलित हैं।

वर्तमान सृष्टि ही नहीं, पूर्व में जो सृष्टि हुई थी, और भविष्य में जो होगी, उसका कर्ता परमेश्वर ही है। सृष्टि रचना, संर्वधन व प्रलय अर्थात् 'कारण तत्व' में विलीन करना, एकमात्र उसका ही कार्य है। सृष्टि रचना एक निरन्तर प्रवाहमान ईश्वरीय प्रक्रिया है।

परमात्मा के अत्यन्त सूक्ष्म सामर्थ्य से 'अन्तरिक्ष' अर्थात् भूमि और सूर्यादि के बीच पोल, रिक्त स्थान है, वह भी 'नियत' किया हुआ है।

सर्वोत्तम सामर्थ्य से सूर्यादि प्रकाश करने वाले, और प्रकाशरहित पृथिवी आदि लोक, परमाणु कारण से पृथिवी, जल के कारण से जल, और रूप सामर्थ्य से दिशाएं उत्पन्न की हैं।

इसी प्रकार सब लोकों के कारण रूप सामर्थ्य से परमेश्वर ने सब लोक और उसमें बसने वाले पदार्थों को उत्पन्न किया है। परमेश्वर ने आकाश को भी रचा है-जो सब तत्वों के ठहरने का स्थान है। ईश्वर ने प्रकृति से लेकर घास पर्यन्त जगत को रचा है।

पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमादि अपनी-अपनी परिधि में, अन्तरिक्ष के मध्य में (भार हीन स्थिति में) सदा घूमते रहते हैं। पृथिवी सूर्य के चारो ओर घूमती है। सूत्रात्मा वायु के आधार और आकर्षण से, सब लोकों का धारण और भ्रमण होता है। परमेश्वर अपने सामर्थ्य से, सब लोकों का धारण, भ्रमण और पालन कर रहा है।

चन्द्रलोक पृथिवी के चारों ओर घूमता है। कभी-कभी पृथिवी और सूर्य के बीच में आ जाता है। सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा प्रकाशित होता है। सूर्य की किरणें, चन्द्रमा से परावर्तित होकर बलशाली व ठन्डी हो जाती हैं। चन्द्रमा के प्रकाश और वायु से पृथिवी पुष्टि होती है। इसीलिये ईश्वर ने नक्षत्र लोकों के समीप, चन्द्रमा स्थापित किया है।

लगभग दो अरब वर्ष पहले के, सृष्टि सम्बन्धी वैदिक ज्ञान की सम्पुष्टि आधुनिक विज्ञान कर रहा है। यह वैदिक ज्ञान छै हजार वर्ष से पूर्व, लुप्त हो गया था। महर्षि जैमिनी के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने उसका पुनरुद्धार ही नहीं किया बल्कि ज्ञान-विज्ञान के सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित कर दिया, जहां से अब, उसे डिगाने का सामर्थ्य किसी भी विज्ञान-वेत्ता में नहीं है।

सृष्टि रचना की इस पृष्ठ भूमि से पूर्णतया आश्वस्त व सांगोपांग दीक्षित हो जाने के पश्चात् इस तुला पर अन्य धर्मों का आकलन महर्षि के लिये बहुत ही सहज कार्य था। इसीलिये इन धर्मं के आचार्यों से शास्त्रार्थ में कभी पराजय का मुंह नहीं देखना पड़ा। आजन्म अविजित योद्धा रह कर परमहंस गुरु विरजानन्द जी महाराज के 'कुलक्कर' और 'कालजिव्हं' वरदान सार्थक कर दिए।

महर्षि प्रतिज्ञाबद्ध थे-अज्ञानांधकार को दूर करके वेदज्ञान से जगत को आलोकित करेंगे। आइए, देखते हैं ईसाई, इस्लाम व अन्य मतों (धर्मों) में सृष्टि रचना का विधान और उसका सूक्ष्मतम निरीक्षण-परीक्षण।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें सम्मुलास (अध्याय) में ईसाई मत की समीक्षा 133 प्रश्नोत्तर के रूप में की है निम्नांकित प्रश्नोत्तर जो तोरेत, इञ्जील व बाईबल से लिए गए हैं, सृष्टि रचना का स्वरूप निरुपित करते हैं। इन प्रश्नोत्तर का सारांश ही क्रमशः दिया जाता है।

प्रश्न 1. ईसाई इस सृष्टि को ही प्रथम व अंतिम सृष्टि मानते हैं पृथिवी बेडोल, सूनी और गहराई के अंधिकाश था। ईश्वर सनाई, पर्वत, चौथे आसमान आदि में विशेष रहता है।

प्रश्न 4. सृष्टि के पूर्व ईश्वर के अतिरिक्त कोई वस्तु नहीं थी।

प्रश्न 5. आदम को धूलि से बनाया और उसके नथुनों में सांस फूंकी। नारी को धूल से नहीं बनाया। उसको आदमी की पसली की एक हड्डी से बनाया।

(क्रमशः)

हे जीव ! तू सूर्य और चन्द्र के समान निर्भय बन

-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. पर. भारत

इस सृष्टि में सूर्य और चंद्रमा दो ऐसी शक्तियां हैं, जो कभी किसी से भयभीत नहीं होतीं। सदैव निर्भय होकर अपने कर्तव्य की पूर्ति में लगी रहती हैं। यह सूर्य और चन्द्र निर्बाध रूप से निरंतर, अपने कर्तव्य पथ पर गतिशील रहते हुए समग्र संसार को प्रकाशित करते हैं। इतना ही नहीं ब्राह्मण व क्षत्रिय ने भी कभी किसी के आगे पराजित होना स्वीकार नहीं किया। विजय प्राप्त करने के लिए वह सदा संघर्षशील रहे हैं। जिस प्रकार यह सब कभी पराजित नहीं होते उस प्रकार ही हे प्राणी ! तू भी निरंतर अपने कर्तव्य पथ पर बढ़ कभी स्वप्न में भी पराजय का वरण मत कर। इस तथ्य को अथर्ववेद के मन्त्र संख्या २.१५.३.४ में इस प्रकार कहा है:

यथा सूर्यश्च चन्द्रश्च, न बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण माबिभेः।। अथर्व. २.१५.३।।

यथा ब्रह्म च क्षत्रं च, न मे बिभीतो न रिष्यतः।
एवा मे प्राण माबिभेः।। अथर्व. २.१५.४।।

यह मन्त्र मानव मात्र को निर्भय रहने की प्रेरणा देता है। किसी भी परिस्थिति में कभी भयभीत न हो। मन्त्र एतदर्थ देते हुए कहा है कि जिस प्रकार कभी किसी से न डरने के कारण ही सूर्य और चन्द्र कभी नष्ट नहीं होते, जिस प्रकार ब्रह्म शक्ति तथा क्षात्र शक्ति भी कभी किसी से न डरने के कारण ही कभी नष्ट नहीं होती। जब यह निर्भय होने से कभी नष्ट नहीं होते तो तूं भी निर्भय रहते हुए नष्ट होने से बच।

हम डरते हैं डर क्या है ? भयभीत होते हैं, भय क्या है ? जब हम मानसिक रूप से किसी समय अशक्त होकर कार्य करते हैं इसे ही भय कहते हैं। स्पष्ट है कि मनोशक्ति का ह्रास भी भय है। किसी प्रकार की निर्बलता, किसी प्रकार की शंका ही भय का कारण होती है, जो हमें कर्तव्य पथ से च्युत कर भयभीत कर देती है। इससे मनोबल का पतन हो जाता है तथा भयभीत मानव पराजय की और अग्रसर होता है। मनोबल क्यों गिरता है-इसके गिरने का कारण होता है पाप, इसके गिरने का कारण होता है अनाचार, इस के गिरने का कारण होता है मानसिक दुर्बलता। जो प्राणी मानसिक रूप से दुर्बला है, वह ही लोभ में फंस कर अनाचार करता है, पाप करता है, अपराध करता है, अपनी ही दृष्टि में गिर जाता है, संसार मैं सम्मानित कैसे होगा ? कभी नहीं हो सकता।

मेरे अपने जीवन में एक अवसर आया। मेरे पाँव में चोट लगी थी। इस अवस्था में भी मैं अपने निवास के ऊँचे दरवाजे पर प्रतिदिन अपना स्कूटर लेकर चढ़ जाता था। चढ़ने का मार्ग अच्छा नहीं था। एक दिन स्कूटर चढ़ाते समय मन में आया कि आज में न चढ़ पाऊँगा, गिर जाऊँगा। अतः अशक्त मन ऊपर जाने का साहस न कर पाया तथा मार्ग से ही लौट आया। पुनः प्रयास किया किन्तु भयभीत मन ने फिर न बढ़ने दिया, तीसरी बार प्रयास कर आगे बढ़ा तो गिर गया। इस तथ्य से यह स्पष्ट होता है कि जब भी कोई कार्य भ्रमित अवस्था में किया जाता है तो सफलता नहीं मिलती। इसलिए प्रत्येक कार्य निर्भय मन से करना चाहिए सफलता निश्चय ही मिलेगी। प्रत्येक सफलता का आधार निर्भय ही होता है।

हम जानते हैं कि मनोबल गिरने का कारण दुर्विचार अथवा पापाचरण ही होते हैं। जब हमारे हृदय में पापयुक्त विचार पैदा होते हैं, तब ही तो हम भयभीत होते हैं। जब हम किसी का बुरा करते हैं तब ही तो हमें भय सताने लगता है कि कहीं उसे पता चल गया तो हमारा क्या होगा ? इससे स्पष्ट होता है कि छल पाप तथा दोष पूर्ण व्यवहार से मनोबल गिरता है, जिससे भय की उत्पत्ति होती है तथा यह भय ही है जो हमारी पराजय का कारण बनता है। जब हम निष्कलंक हो जावेंगे तो हमें किसी प्रकार का भय नहीं सता सकता। जब हम निष्पाप हो जावेंगे तो हमें किसी प्रकार से भी भयभीत होने की आवश्यकता नहीं रहती। जब हम निर्दोष व्यक्ति पर अत्याचार नहीं करते तो हम किस से भयभीत हों ? जब हम किसी का बुरा चाहते ही नहीं तो हम इस बात से भयभीत क्यों हो कि कहीं कोई हमारा बुरा न कर दे, अहित न कर दे। यह सब तो वह व्यक्ति सोच सकता है, जिसने कभी किसी का अच्छा किया ही नहीं, सदा दूसरों के धन पर, दूसरों की सम्पत्ति पर अधिकार करता रहता है। भला व्यक्ति न तो ऐसा सोच सकता हो तथा न ही भयभीत हो सकता है।

इसलिए ही मन्त्र में सूर्य तथा चंद्रमा का उदाहरण दिया है। यह दोनों सर्वदा निर्दोष हैं। इस कारण सूर्य व चंद्रमा को कभी कोई भय नहीं होता। वह यथावत् अपने दैनिक कार्य में व्यस्त रहते हैं, उन्हें कभी कोई बाधा नहीं आती। इससे यह तथ्य सामने आता है कि निर्दोषता ही निर्भयता का मार्ग है, निर्भयता की चाबी है, कुंजी है।

अतः यदि हम चाहते हैं कि हम जीवन पर्यंत निर्भय रहे तो यह आवश्यक है कि हम अपने पापों व अपने दुर्गुणों का त्याग करें। पापों, दुर्गुणों को त्यागने पर ही हमें यह संसार तथा यहाँ के लोग मित्र के समान दिखाई देंगे। जब हमारे मन ही मालिन्य से दूषित होंगे तो भय का वातावरण हमें हमारे मित्रों को भी शत्रु बना देता है, क्योंकि हमें शंका बनी रहती है कि कहीं वह हमारी हानि न कर दें। इसलिए हमें निर्भय बनने के लिए पाप का मार्ग त्यागना होगा, छल का मार्ग त्यागना होगा तथा सत्य पथ को अपनाना होगा। यही सत्य है, यही निर्भय होने का मूल मन्त्र है, जिस की ओर मन्त्र हमें ले जाने का प्रयास कर रहा है।

वेद कहता है कि मित्र व शत्रु, परिचित व अपरिचित, ज्ञात व अज्ञात, प्रत्यक्ष व परोक्ष, सबसे हम निर्भय रहे। इतना ही नहीं सब दिशाओं से भी निर्भय रहे। जब सब ओर से हम निर्भय होंगे तो सारा संसार हमारे लिए मित्र के सामान होगा। अतः संसार को मित्र बनाने के लिए आवश्यक है कि हम सब प्रकार के पापों का आचरण त्यागें तथा सब को मित्र भाव से देखें तो संसार भी हमें मित्र समझने लगेगा। जब संसार के सब लोग हमारे मित्र होंगे तो हमें भय किससे होगा, अर्थात् हम निर्भय हो जावेंगे। इस निमित वेदादेश का पालन आवश्यक है।

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी उपाकर्म

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर में वेद प्रचार सप्ताह श्रावणी उपाकर्म का आयोजन दिनांक 21 अगस्त 2017 से 27 अगस्त 2017 तक बड़े उत्साहपूर्वक किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा पं. सुन्दर लाल शास्त्री जी चण्डीगढ़ वाले तथा विशेष वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी तथा भजनोपदेशक श्री राजेश अमर प्रेमी जी होंगे। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि परिवार सहित इस श्रावणी के कार्यक्रम में पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

-रमेश कालड़ा महामन्त्री आर्य समाज

दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिक उत्सव व दुर्लभ शारद यज्ञ का सन्देश व निमन्त्रण

धर्मप्रेमी सज्जनों ईश्वर की अपार अनुकम्पा से, दिवंगत पूज्य चरणों के निरन्तर प्रवाहित होने वाले आशीर्वादों के फलस्वरूप, और आप सभी हितैषियों के सहयोग व मंगलाकामनाओं के कारण ही पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराजा की साधना स्थली दयानन्द मठ चम्बा अपनी जनकल्याणकारी गति-विधियों को जारी रखे हुए है। गुरुजनों व प्रिय पुत्र के आकस्मिक महा गमन से यहां के कार्यों को धक्का तो लगा, झटका तो लगा, पर यहां के काम रुके नहीं। पूज्य स्वामी जी के समय में इन कार्यों में जिस प्रकार की गतिशीलता थी वह गतिशीलता अब बेशक नहीं, पर चल तो रहे हैं। वह आकर्षण, वह प्रभाव बेशक इन कार्यों का न हो, जो पूज्य स्वामी जी के रहते हुए होता था, पर हमने उन्हें जारी तो रखा हुआ हैं। पूरी निष्ठा व आस्था से, प्राणार्पण से जारी रखा हुआ है। कहां राजा भोज कहां गंगू तेली। स्वामी जी तो स्वामी जी थे पर मेरा निर्माण भी तो उन्होंने ही किया। उन्होंने ही इसे सजाया, संवारा, मिट्टी से माधो बनाया। मेरे जीवन पर उन्हीं का अक्ष है। इसीलिए उनके बाद जो कुछ भी कर पा रहा हूं, वह सब उन्हीं के आशीर्वाद से कर पा रहा हूँ। आज भी ऐसा लगता है, जैसे उन्हीं के दिशा निर्देश में काम कर रहा हूँ। सूर्य के अस्ताचल को चले जाने पर चन्द्रमा, जो कि सूर्य से ही पोषित है सूर्य के कार्य को आगे बढ़ाता है। संसार को रोशनी देता हैं। बेशक वह रोशनी मन्द ही क्यों न हो प्रकाश तो देता है। मेरा कार्य, मेरा प्रयास भी उसी प्रकार का है।

मकसद हैं मेरा पोषित रहें काम उनके
प्रकाश पुंज न सही करुं यत्न जुगनू बनकर
जीवन है उनका यह तन मन है उनका
निभाऊं फर्ज अपना भक्त हनुमान बनके

पूज्य स्वामी जी को परोपकार के कार्य बहुत प्रिय थे। **परोपकाराय सतां विभूतयः** उनका भी सारा का सारा जीवन दूसरों के दुःख, दर्दो को मिटाने में ही बिता। उसी प्रकार के कार्य कलापों को जीवन में करते रहें। परोपकार का सबसे बड़ा साधन यज्ञ है। जब से यह ज्ञान उन्हें हुआ, तब से वे यज्ञों के प्रति समर्पित हो गए। बड़े-बड़े यज्ञों का अनुष्ठान उन्होंने किया। विभिन्न प्रकार के यज्ञों को भी करते रहें। उन यज्ञों में भी ऋग्वेद में निर्दिष्ट दुर्लभ शारद यज्ञ उन्हें बहुत प्रिय था। क्योंकि राष्ट्र के स्वाभिमान को जगाने के लिए यह यज्ञ किया जाता है। राष्ट्र के गौरव को बढ़ाने के लिए यह यज्ञ किया जाता है। देश में क्षात्र शक्ति की वृद्धि हो, इसलिए यह यज्ञ किया जाता है। **वेद भगवान की-ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हो द्विजब्रह्म तेज धारी क्षत्रिय महारथी हों अरि दल विनाशकारी।।** इस भावना की पूर्ति के लिए यह यज्ञ किया जाता है। इसलिए स्वामी जी ने इस यज्ञ को प्रतिवर्ष करना शुरु किया। यह यज्ञ उन्हें सबसे प्यारा था। नाना विध विरोधों के बाद भी उन्होंने अपने जीवन काल में इसे जारी रखा। जीवन के अंतिम क्षणों में मेरे बेटे को व मुझे अपने सामने बिठाकर स्वामी जी ने आगे भी इसे जारी रखने का हमसे वचन लिया था। यह बात अलग है कि उसके कुछ ही दिनों के बाद बेटा चला गया। ठीक दो महीने के बाद स्वामी जी भी चले गए। व्यथा व पीड़ा की स्थिति में मैंने पूज्य स्वामी जी को दिए वचन को निभाया। मई में बेटा गया, अगस्त में पूज्य स्वामी जी चलते बने। अक्तूबर महीने में हमने स्वामी जी के अभाव में पहला दुर्लभ शारद यज्ञ किया। स्वामी जी के जाने के बाद दो दुर्लभ शारद यज्ञों को आप सभी के सहयोग से सफल किया। आप लोगों का सहयोग न होता तो कैसे श्रम साध्य, व्यय साध्य इन यज्ञों को कर पाता। आप लोगों का सहारा न होता तो महान आघात व व्यथा से पीड़ित मैं और मेरा परिवार, संस्था के सभीजन कैसे उठ खड़े होकर इन कार्यों को कर पाते।

प्रियजनों कष्टकारी व्यथा से भरे विगत दो वर्षो में संस्था में जो भी हो पाया है उन सबका श्रेय आप लोगों को भी जाता है। हम लोग तो निमित हैं अस्तु आप लोगों के सहयोग व सहारे से उत्साहित हो, **इस वर्ष भी 18 सितम्बर से 22 सितम्बर तक मठ के वार्षिक यज्ञ** के आयोजन का साहस जुटा पा रहा हूँ और आप लोगों से भी हर प्रकार के सहयोग की अभिलाषा रखता हूँ। साथ ही इस महान यज्ञ में शामिल होने के लिए, आप लोगों को सादर आमंत्रित भी कर रहा हूँ। यह भी तो एक शिष्टाचार है अन्यथा संस्था तो आप लोगों की ही है। सज्जनों **18 सितम्बर 2017 से 20 सितम्बर 2017** तक मठ का वार्षिक उत्सव जिसमें पूज्य स्वामी सवितानन्द जी महाराज (झारखण्ड वाले) के ब्रह्मत्व में किए जाने वाले यज्ञ से देवो का पूजन होगा। पितरो का तर्पण होगा। पवित्र वेद की ऋचाओं का गान किया जाएगा। महामनीषी तपस्वी, चिन्तक, विचारक पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज के इन यज्ञों से सम्बन्धित सरल व सारगर्मित उपदेशों की गंगा प्रवाहित होगी। यह दोनों ही तपस्वी संत पूज्य स्वामी जी के बहुत ही आत्मीय व प्रिय पात्र रहें। स्वामी सवितानन्द जी तो उनके शिष्यों में से एक मात्र संन्यासी शिष्य हैं, और दोनों ही महापुरुषों का भरपूर आशीर्वाद मुझे प्राप्त है। इन्हीं के संरक्षण व मार्ग दर्शन में यहां के सब कार्य चल रहे हैं। एक तरह से स्वामी जी के बाद इन्हीं दोनों महा तपस्वी सन्तों ने इस संस्थान को सम्भाल लिया है। सूक्ष्म जगत में दिवंगत पूज्यजनों के व स्थूल जगत में इन दोनों पूज्यजनों के आशीर्वाद व इनकी छत्र-छाया में यह संस्थान गतिशील व सुरक्षित है।

21 सितम्बर 2017 प्रातः साढ़े छः बजे 6:30 से दुर्लभ शारद यज्ञ इन्हीं महापुरुषों के ब्रह्मत्व व सुरक्षा घेरे में आरम्भ हो जाएगा। जो कि भगवती ऊषा देवी के रूप में अपनी लालिमा को बिखरने वाले सूर्य भगवान की वन्दना कर आगे बढ़ेगा। पलों, मिन्टों, फिर घंटों से गुजरता हुआ यह मध्याह्न को, फिर संध्या बेला में सूर्य देव के अस्ताचल को जाने के बाद शाम को, शाम से रात्री के प्रथम द्वितीय प्रहरों से गुजरता हुआ ब्रह्मबेला में प्रवेश करेगा। पुनः ऊषा काल में अमोघ आशीर्वादों की वर्षा करने वाले देवों, पितरों, दिव्यात्माओं के साथ पुलकित व हर्षित सूर्य भगवान के दर्शनों के बाद अनवरत चलता हुआ ठीक प्रातः 10 बजे विश्रान्ति को प्राप्त करेगा। 22-9-2017 प्रातः इस यज्ञ की पूर्णाहुति हो जाएगी। इस यज्ञ में ऋग्वेद की ऋचाओं से आहुतियाँ समर्पित की जाएगी। महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय की छात्र-छात्राएं व स्वामी सुमेधानन्द शिष्य मंडल के सदस्य व दयानन्द संस्कृत महाविद्यालय के स्नातक बारी-बारी से ऋचाओं का पाठ करेंगें। मध्य में महागायत्री के गायन के साथ भी आहुतियाँ दी जाएगी। बीच-बीच में 15-15, मिन्टों के लिए दोनों ही संन्यासियों का, आचार्य महावीर सिंह का यज्ञ सम्बन्धित उपदेश तथा श्री संदीप आर्य पानीपत, श्री हरीशमुनी सुन्दरनगर, श्री हेमराज जी अमृतसर, कुमारी डिप्पल व शिष्य मडंली आदर्श विद्यालय, श्रीमति सरस्वती देवी जी, श्रीमति रुकमणी देवी जी, श्री भगवती प्रशाद जी पन्त यह सब भी अपने संगीत की झंकारों से यज्ञ के सुन्दर वातावरण को झंकृत करेंगें। अपनी स्वर लहरियों से माहौल को मनमोहक, रोमांचित व भावुक बना देंगे। सज्जनों यज्ञ में प्रचुर मात्रा में दी गई घृत सामग्री, पुष्टीकारक, मिष्ठान युक्त उत्तम पदार्थों की आहुतियों से अत्यधिक तृप्त देवों के झरते हुए आशीर्वादों में नहाने के लिए अवश्य आप लोग इस यज्ञ में आए। पूरी आस्था व निष्ठा से यज्ञ में भाग लेकर सफल मनोरथ होकर जाएं।

बन्धुओं श्रद्धा से ओतप्रोत होकर जितनी आस्था व निष्ठा से आप

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्यक् दृष्टि वाले बनो

-आचार्य रमेश कुमार शास्त्री पुरोहित आर्य समाज मो. गोबिन्दगढ़, जालन्धर

दया ही धर्म का मूल भाव है। दयाहीन मनुष्य में धर्म नहीं हो सकता। वह हर व्यक्ति अधर्मी है जो प्राणी मात्र का हित न करता हो। जिस प्रकार शुष्क खेत में लाख यत्न करने पर भी बीज का अंकुरित होना असम्भव है ठीक उसी प्रकार दया से रहित हृदय में धर्म का बीज कभी भी अंकुरित नहीं हो सकता। इसलिए सन्त लोग कहा करतें हैं कि सम्यक दृष्टि वाले बनो। परहित के बारे में सोचो। जो सम्यक दृष्टि है वह दूसरों को समान भाव से देखता है। मनुष्य को मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों प्रकार से दूसरों का अहित नहीं करना चाहिए।

जो व्यक्ति दूसरों के दुःख को दूर करने का सोचता है या प्रयास करता है वह असीम सुखों को प्राप्त करता है। सच कहे तो परहित में ही अपना हित निहित होता है। लोगों के प्रति संवेदना प्रकट करो। दूसरों की वेदना को अपनी वेदना समझो क्योंकि वेदना से ही सम्वेदना उत्पन्न होती है। पूजा पाठ, हवन-यज्ञ दान-धर्म यह जरूरी है पर यह संवेदना नहीं है। प्राणियों के प्रति संवेदना अलग है। मन्दिरों के निर्माण के लिए किसी धर्मशाला के निर्माण के लिए लाखों रूपये का दान करते हैं और करना भी चाहिए। यह भी संवेदना नहीं है। अगर एक व्यक्ति पीड़ित है कोई बहुत बड़ी बीमारी उसे लगी है परन्तु इलाज के लिए उसके पास धन नहीं है। उस समय उसे जो पीड़ा हो रही है उस पीड़ा को अपनी पीड़ा समझने वाला व्यक्ति ही सचमुच संवेदना से युक्त है। हृदय में संवेदना है तो सहायता के लिए हाथ अपने आप खड़ा हो जाता है। सम्यक दृष्टि वाले व्यक्ति के हृदय में ही संवेदना प्रकट होती है। जो मनुष्य के दर्द को दर्द मान लेता है वही तो मर्द है। वही सच्चा संवेदनशील व्यक्ति है, वही परमात्मा का पुत्र है।

एक बार एक सेठ व्यक्ति ने बहुत ही सुन्दर चित्र लाखों रूपयों की कीमत से खरीदा और उसे लेकर घर जा रहा था। तभी एक फटे बेहाल में महिला अपने बच्चे के साथ भीख माँग रही थी। भीख माँग कर ही वह महिला अपना एवं अपने बच्चे का पेट भरती थी। उसी दिन वह महिला उस सेठ से पैसे माँगने लगी परन्तु सेठ ने उसे पैसे नहीं दिए। वह महिला आगे चली गई। तभी उस सेठ ने अपने साथी से पूछा कि यह कौन महिला है जो भीख माँग रही थी। तभी उसके साथी ने कहा कि महाराज यह वही महिला है जिसका चित्र आप लाखों रूपये खर्च करके ले जा रहे हैं।

यही हाल आज के हम मनुष्यों का भी है। चित्र बनवाने के लिए हम लाखों रूपये खर्च कर देते हैं परन्तु चरित्र के लिए हमसे एक रूपया भी नहीं निकलता। मनुष्य भूल जाता है कि जिस भगवान् की पूजा करने के लिए वह यज्ञ वेदि पर बैठता है वही भगवान तो प्राणी मात्र में विद्यमान है। अतः प्राणियों की सेवा करो, प्राणियों के प्रति संवेदना प्रकट करो। इसी में हम सबका कल्याण है यही परमात्मा की सच्ची उपासना है, यही प्रभु की सच्ची पूजा है।

संवेदना और सहानुभूति मनुष्य की पहचान है। वर्तमान समय में आदमियों के गुण पशुओं में और पशुओं के गुण आदमियों में आ गए हैं। चित्रों के माध्यम से या टी.वी. चैनलों के द्वारा हम देखते हैं कि एक कुत्तिया बिल्ली के बच्चों को अपना दूध पिला रही है। एक शुक्री बच्चों को जन्म देकर मर गई है। गाय लेट गई उस शुक्री के बच्चों को दूध पिला रही है। इन सबका स्वभाव विपरीत है। एक दूसरे के शत्रु हैं। फिर भी एक दूसरे की सहायता करते हैं। परन्तु यह इन्सान एक देवरानी-जेठानी के बच्चों को दूध नहीं पिला सकती। इन्सान सजाति से भी प्रेम नहीं करता परन्तु पशु विपरीत जाति के होते हुए भी एक दूसरे से प्रेम करते हैं। यह है संवेदना का प्रतीक। सहानुभूति का लक्षण।

अगर हमारे में भी इस प्रकार संवेदना और सहानुभूति की भावना नहीं है तो हमें अपने जीवन में इन भावनाओं को प्रकट करना चाहिए। हमारी बौद्धिक संस्कृति हमारे संस्कार तो यही कहते हैं कि :

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्र दुःख भागभवेत्।।

इसी प्रकार की भावना हमारी होनी चाहिए। सब सुखी हो कोई न हो दुःखारी। सम्यक् दृष्टि वाला व्यक्ति यही चिन्तन करता है, उसी के अनुसार कर्म करता है। संसार में सबको सुख भी देता है और स्वयं भी सुखी रहता है। कवि ने क्या खूब लिखा है :

तड़फता देखता हूँ, जब भी कोई सह।
उठा लेता हूँ अपना दिल समझकर।।

पृष्ठ 6 का शेष-दयानन्द मठ चम्बा के वार्षिक...

लोग यज्ञ वेदी में अपने-अपने भाग को ग्रहण करने के लिए उपस्थित दिव्यात्माओं को देवों व पितरों को हव्य प्रदान करोगे। जिन-जिन कामनाओं व इच्छाओं को लेकर उनके चरणों में, उनकी छाया में बैठोगे, आपकी दी आहुतियों से परम तृप्ती को प्राप्त वे देव जन द्रवित होकर आप की उन-उन कामनाओं को उन-उन इच्छाओं को पूर्ण कर देगें। यह सुनिशचित समझो मनु जी महाराज कहते हैं :

येन येन हिभावेन यद् यद्दानम् प्रयच्छतिं।
तत् तत्तेनेवभावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः।।

अर्थात् जिस-2 भाव से जो-जो दान दिया जाता हैं अथवा यज्ञाग्नि में आहुतियां दी जाती हैं। उसी भाव के अनुरुप ससम्मान उसकी कामनाएं, उसकी इच्छाएं पूर्ण होती हैं। यज्ञ का, दान का, फल उसे प्राप्त होता है। मनु जी महाराजा फिर कहते हैं :

स्वाध्याये नित्य युक्तः स्याद दैवेचैवेह कर्मणि।
देवकर्माणि युक्तो युक्तो हि विभर्तीदं चराचरम।।

मनुष्य को स्वाध्याय व देवकर्म में यानि अग्नि होत्र, यज्ञ कर्म में नित्य युक्त रहना चाहिए, संलग्न रहना चाहिए। यानि इन कर्मों को करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति यज्ञकर्म में लगा होता है वह इस चराचर जगत् को तृप्त करता है, उसका पोषण करता है। वह कैसे मनु जी पुनः कहते हैं :

अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यग् आदित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्ठिः वृष्टेरन्नं ततः प्रज्ञाः।।

अग्नि में डाली गयी आहुति सूर्य को पहुंचती हैं। सूर्य से वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न होता है और अन्न से प्राणी उत्पन्न होते हैं। इसलिए यज्ञ ही संसार का कारण हैं। अतः यज्ञ श्रेष्ठ व महान कल्याणकारी कर्म है। और फिर जिस स्थान पर महान तपस्वी सन्तों, ऋषियों और मुनियों ने गहन साधना की हो। परम तप तपा है, बड़े-बड़े यज्ञों के अनुष्ठान किया हो, जिनके कारण वह स्थान तीर्थ बन गया हो, ऐसे स्थानों में जाकर यज्ञानुष्ठानों को करना उनमें भाग लेना सत्वर लाभकारी व महान कल्याणकारी होता है। चम्बा नगरी में दयानन्द मठ की पवित्र धरा पर परम तपस्वी सन्त पूज्य चरणों ने महान तप तपा है। महान साधक पूज्य स्वामी जी ने गहन साधना की है। बहुत बड़े याजक उस यज्ञ पुरुष ने बड़े-बड़े दीर्घ सत्रीय यज्ञों का अनुष्ठान किया हैं। इसलिए यह धरा भी पतित पावनी धरा हो गयी है। यहां का वातावरण पूत व पवित्र करने देने वाला है। इस धरा पर उस तपस्वी यज्ञ पुरुष के द्वारा यज्ञों व सत्संग की पावनी गंगा प्रवाहित की गयी। उसमें नहाने का, उसमें भाग लेने का अपना ही महत्व है। अतः इस यज्ञ में अवश्य आएं, इसमें भाग लें परम कल्याण करेगा।

आर्य समाज जीरा में रक्षाबंधन का त्योहार मनाया गया

आज दिनांक 07-08-2017 दिन सोमवार को आर्य समाज जीरा के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र जी की प्रेरणा से रक्षाबंधन का पर्व बड़ी ही धूमधाम और हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया, जिसका प्रारम्भ यज्ञ-हवन से हुआ, जिसमें यजमान के रूप में सावित्री मैम जी यज्ञ की शोभा बढ़ाए। यज्ञोपरान्त पुरोहित श्री किशोर कुणाल शास्त्री जी ने रक्षा बन्धन के आध्यात्मिक अर्थों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्षाबंधन पर्व कोई साधारण पर्व नहीं है वरन् यह भाई-बहन के अटूट प्यार का प्रतीक है। भाई-बहन का आजीवन एक दूसरे के साथ प्रेम बना रहे यह संकल्प लेने का सुअवसर है। अन्त में शांति पाठ के बाद प्रसाद वितरण किया गया। पुरोहित जी व प्रधान जी ने सबके जीवन की मंगलमय की कामना व भावना करते हुए इस पर्व में सम्मिलित आर्य भाई बहनों की ढेरों सारी बधाईयाँ दीं।

-श्री सुभाष चन्द्र आर्य

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट में संस्कृत दिवस पर संगोष्ठी

संस्कृत भाषा के प्रचार प्रसार हेतु आर्य समाज मंदिर फरीदकोट विगत कई वर्षों से प्रयासरत है। इसी कड़ी के रूप में वैदिक विप्र परिषद एवं कर्मशील संस्कृत विकास मंच की ओर से संयुक्त रूप में संस्कृत दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्कृत भाषा की जीवन में उपयोगिता विषय पर संगोष्ठी की गई। यह संगोष्ठी प्रो. विपन लाल अधिकृत अधिकारी अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र, सरकारी ब्रजिन्द्रा कालेज की अध्यक्षता में हुई। प्रिंसीपल प्रो. राम मोहन त्रिपाठी कालेज आफ एजुकेशन मुदकी विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुये। संगोष्ठी का आरम्भ वैदिक विप्र परिषद के सदस्यों द्वारा स्वस्ति वाचन के साथ किया गया। वैदिक विप्र परिषद के अध्यक्ष पं. रमेश पराशर जी ने अपने वक्तव्य द्वारा संगोष्ठी का शुभारम्भ किया गया। फरीदकोट में संस्कृत भाषा के उत्पात एवं प्रचार प्रसार हेतु वैदिक विप्र परिषद के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया। इसके पश्चात आचार्य पंडित कमल किशोर शास्त्री ने संस्कृत भाषा के विकास की चुनौतियों के विषय में अपने विचार प्रकट किये। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित प्रिंसीपल डा. राम मोहन त्रिपाठी जी ने संस्कृत भाषा के विकास हेतु अपने महाविद्यालय में भविष्य में संस्कृत भाषा का अध्यापन आरम्भ करने का आश्वासन दिया। कर्मशील संस्कृत विकास मंच के निदेशक डा. निर्मल कौशिक ने पंजाब में एकमात्र फरीदकोट में केन्द्र सरकार द्वारा स्थापित अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्रों को विशेष उपलब्धि बताते हुये इन केन्द्रों की महत्ता और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। वैदिक विप्र परिषद के संरक्षक पं. ध्रुव प्रसाद शास्त्री ने संस्कृत भाषा के प्रति जन सामान्य की उदासीनता के कारणों पर प्रकाश डालते हुये हमारे उत्तरदायित्व क्या होने चाहिये इस पर उन्होंने कहा कि पहले हमें अपने बच्चों को संस्कृत भाषा पढ़ानी चाहिये। उन्होंने आर्य समाज मंदिर में संस्कृत भाषा के अध्यापन हेतु अनौपचारिक शिक्षण केन्द्र चलाये जाने की भी प्रशंसा की। अध्यक्षीय भाषण देते हुये प्रो. विपन लाल प्रवक्ता ने बताया कि सभी देशों की अपनी भाषाओं की पहचान है लेकिन भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत के कारण हम विश्व भर में इस भाषा के महत्व को नहीं बता सके। अन्त में मंच संचालन पं. कमलेश शास्त्री ने सभी के विचारों को समावेश करते हुये संस्कृत भाषा को जीवन के लिये उपयोगी एवं सार्थक बताया। आर्य समाज मंदिर के प्रधान श्री कपिल सहूजा एडवोकेट ने सभी विद्वानों का धन्यवाद किया और इस प्रयास के लिये वैदिक विप्र परिषद का आभार व्यक्त किया।

संस्कृत दिवस के अवसर पर प्रो. विपन लाल ब्रजिन्द्रा कालेज को सम्मानित करते हुये आर्य समाज फरीदकोट के प्रधान श्री कपिल सहूजा एडवोकेट, पं. ध्रुव प्रसाद शास्त्री, पं. कमल किशोर शास्त्री, पं. सुरेश उपाध्याय, पं. दयाशंकर त्रिपाठी, डा. निर्मल कौशिक, मंच संचालक पं. कमलेश कुमार शास्त्री।

कमलेश शास्त्री

भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ मनाई

दिनांक 9.8.2017 को सुबह 9.00 बजे आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल बठिंडा की ओर से क्विट इंडिया मूवमेंट का विशेष दिवस मनाया गया। इस दिन के बारे में श्री अश्विनी मोंगा जी ने प्रकाश डालते हुये भारत छोड़ो आन्दोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने बताया कि 1942 में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने एक संकल्प लिया था भारत छोड़ो का और 1947 में वह महान संकल्प सिद्ध हुआ और भारत स्वतंत्र हुआ। उन्होंने बताया कि भारत छोड़ो आन्दोलन हमारे इतिहास में एक मील का पत्थर है। महात्मा गांधी के करो या मरो के आह्वान से प्रेरित होकर हर हिन्दुस्तानी ने भारत मां को आजादी दिलाने का संकल्प लिया था। उन्होंने कहा कि भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ पर हम उस जन आन्दोलन में शामिल हर सेनानी को नमन करते हैं। इस अवसर पर आर्य माडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल की प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री पी.डी.गोयल और श्री रमेश गर्ग जी ने भी अपने अपने विचार बच्चों के सामने रखें और उन्हें भारत छोड़ो आन्दोलन के बारे में जानकारी दी।

इसके पश्चात बच्चों ने देशभक्ति के गीत गाये। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अमृत लाल जी मित्तल एवं विशेष अतिथि श्री जितेन्द्र बांसल जी थे। कार्यक्रम में सर्वश्री प्रेम चंद जी, डी.पी. रल्हन जी, डा. जवाहर लाल जी, सतपाल जी, इन्द्रा छाबडा तथा उषा गोयल जी विशेष रूप से पधारे। स्कूल स्टाफ ने बड़े जोश से इस में भाग लेकर इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना पूरा पूरा सहयोग दिया। अंत में स्कूल के प्रधानाचार्य ने सभी का धन्यवाद किया तथा शान्ति पाठ के पश्चात कार्यक्रम का समापन किया गया।

आर्य माडल सी.सै.स्कूल बठिंडा में भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर भाग लेते हुये पी.डी.गोयल एवं अन्य सदस्य।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।